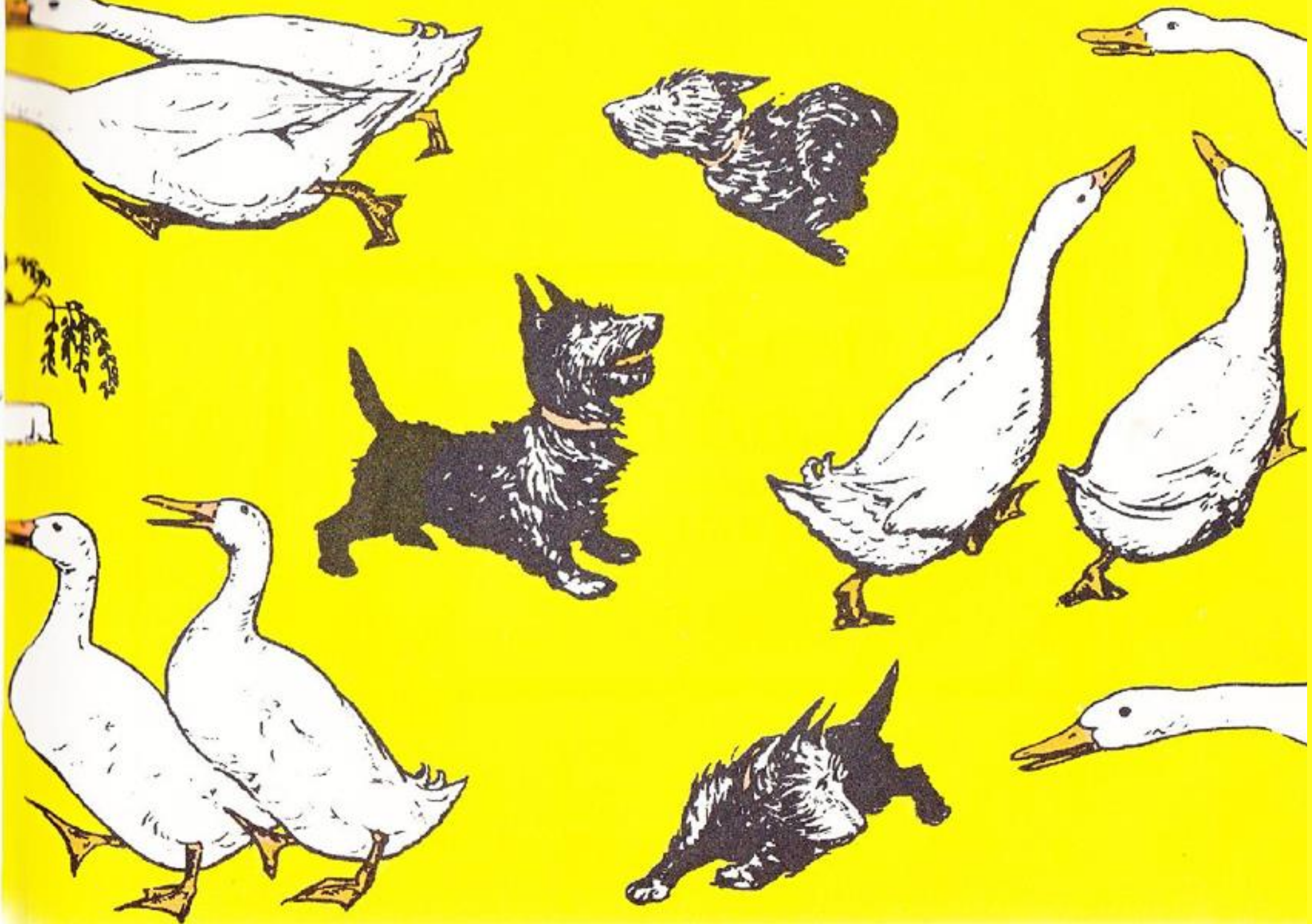


एंगस और बत्तखें

लेखन व चित्रः मार्जरी फ्लैक

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





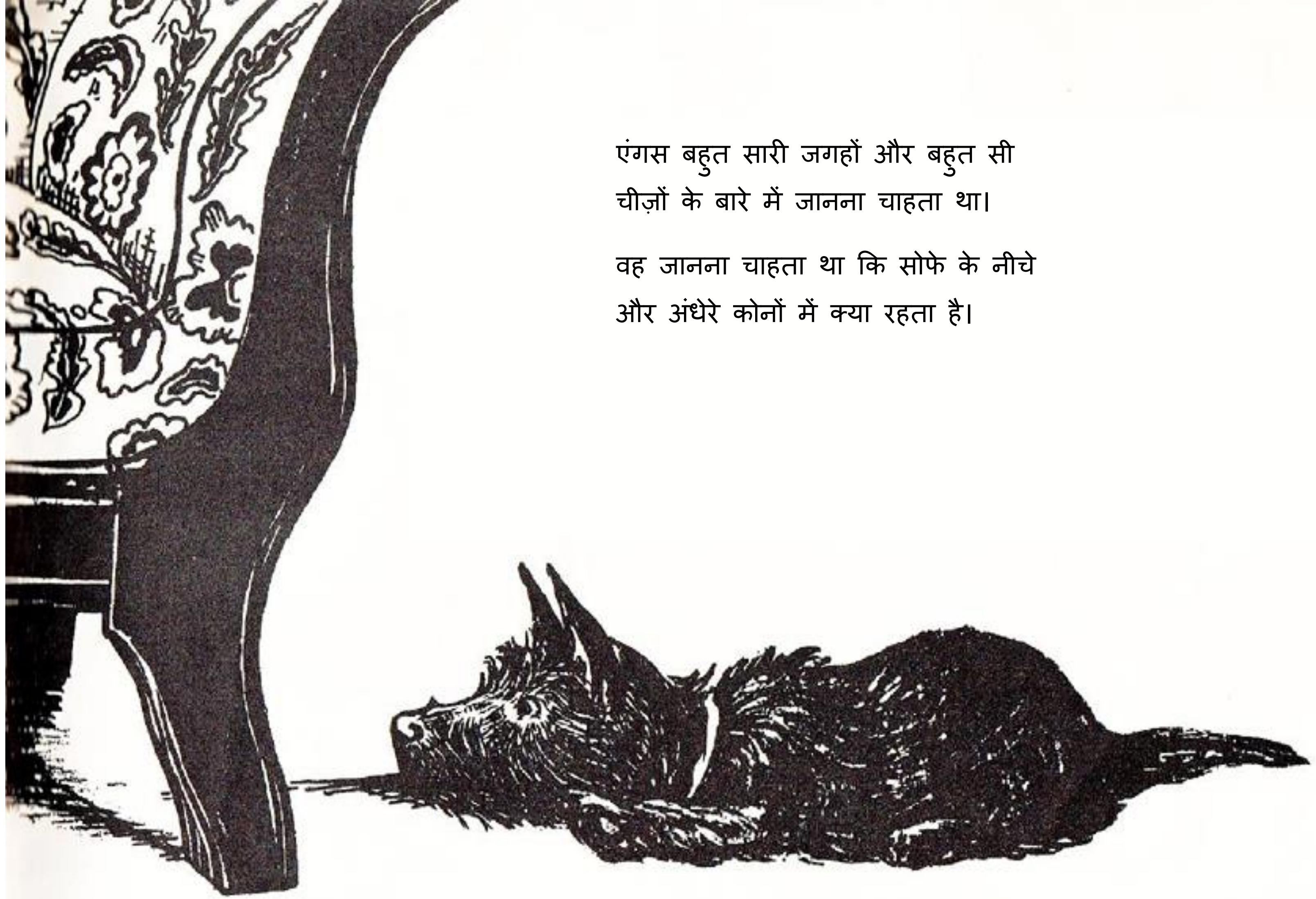
एंगस और बत्तखें

लेखन व चित्रः मार्जरी फ्लैक
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक समय एक बहुत ही छोटा-सा कुत्ता था, जिसका नाम एंगस था, क्योंकि उसके माता-पिता स्कॉटलैण्ड के थे।

हालांकि एंगस का बाकी शरीर बहुत छोटा था, उसका सिर काफ़ी बड़ा था और पैर भी।





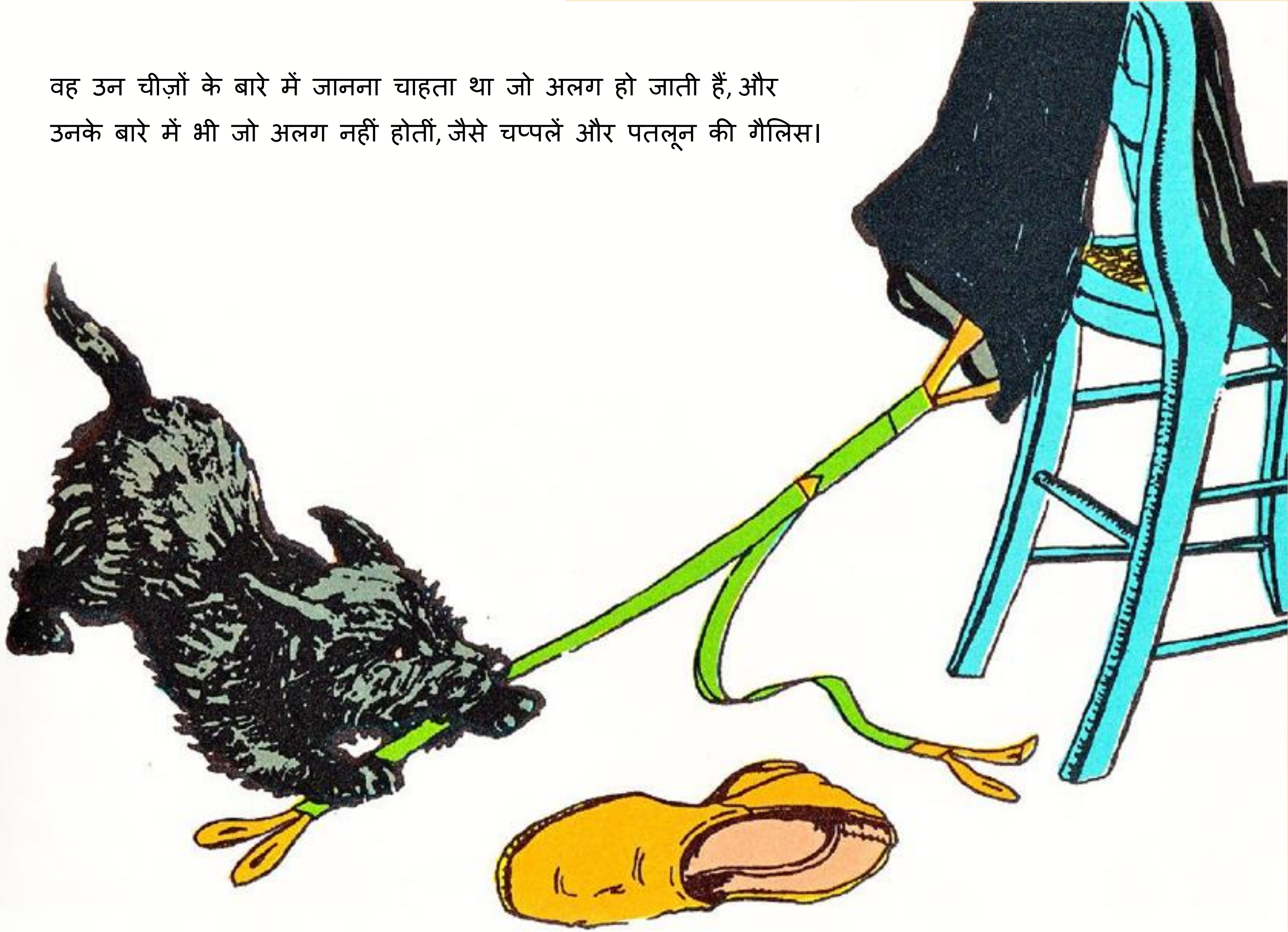
एंगस बहुत सारी जगहों और बहुत सी चीज़ों के बारे में जानना चाहता था।

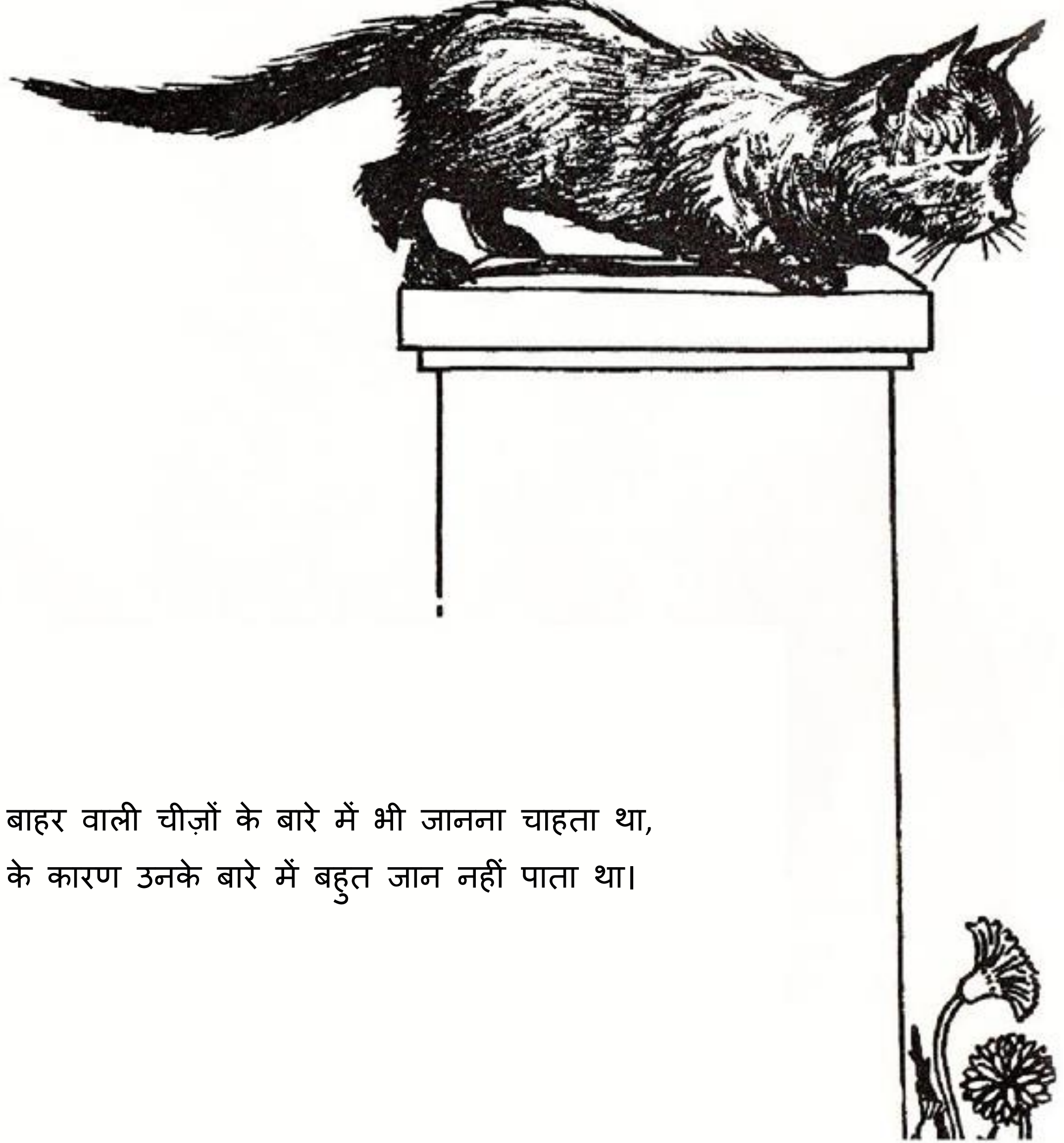
वह जानना चाहता था कि सोफे के नीचे और अंधेरे कोनों में क्या रहता है।



आईने में नज़र आने वाला नन्हा कुत्ता कौन है।

वह उन चीज़ों के बारे में जानना चाहता था जो अलग हो जाती हैं, और उनके बारे में भी जो अलग नहीं होतीं, जैसे चप्पलें और पतलून की गैलिस।



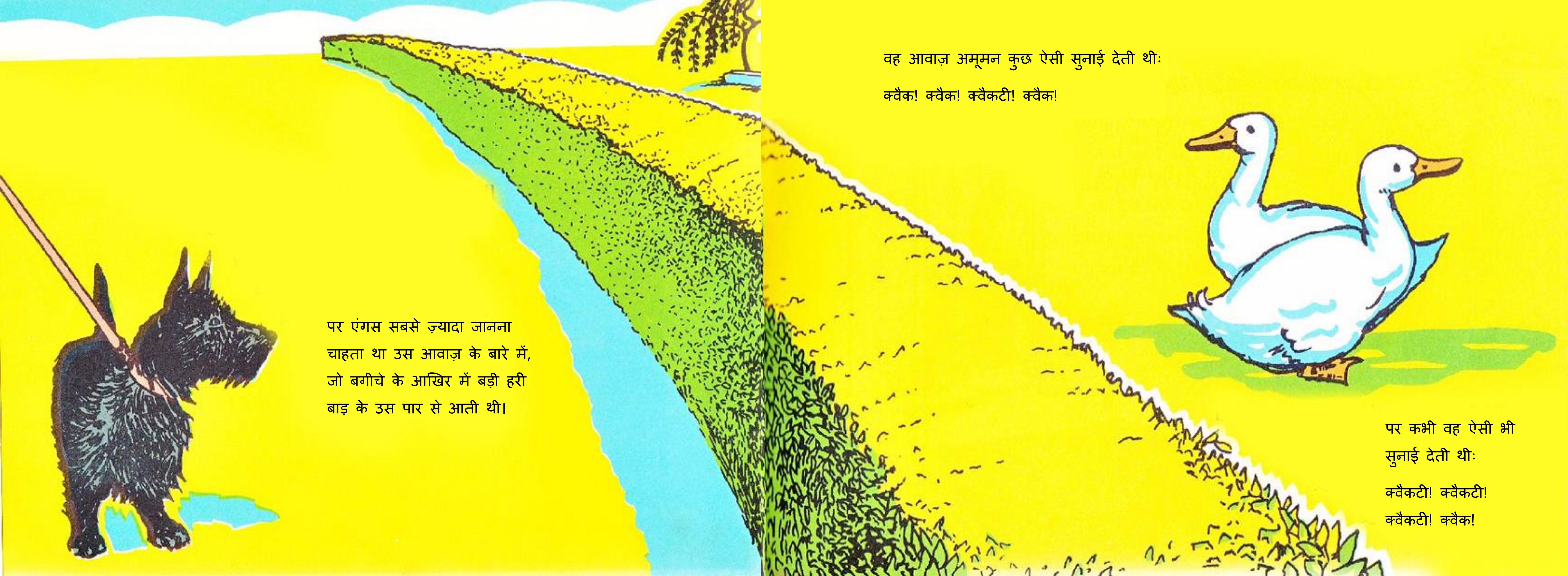


एंगस घर के बाहर वाली चीज़ों के बारे में भी जानना चाहता था,
पर वह पट्टे के कारण उनके बारे में बहुत जान नहीं पाता था।

पट्टे का एक सिरा उसके गले की
पट्टी से बंधा होता था



और दूसरा किसी और से।



पर एंगस सबसे ज़्यादा जानना
चाहता था उस आवाज़ के बारे में,
जो बगीचे के आखिर में बड़ी हरी
बाड़ के उस पार से आती थी।

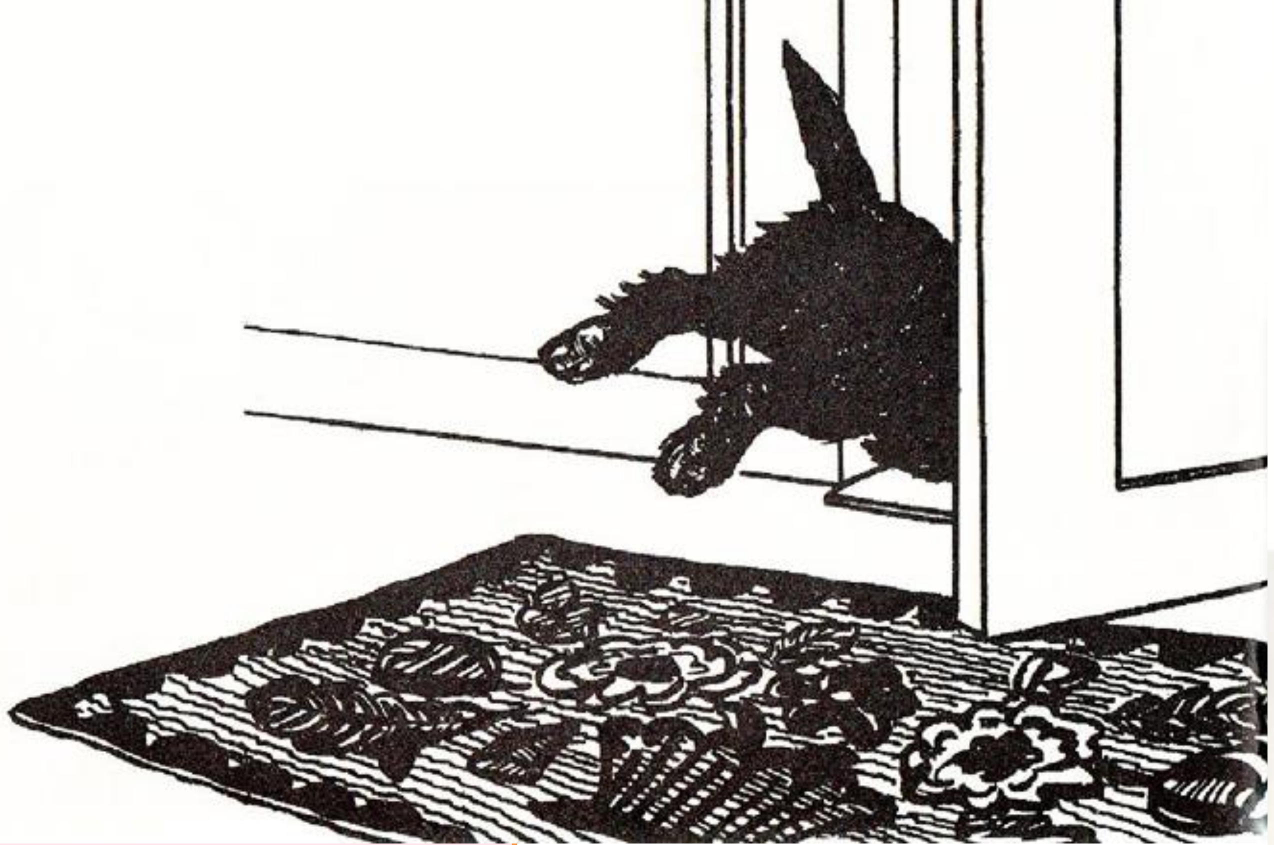
वह आवाज़ अमूमन कुछ ऐसी सुनाई देती थीः

क्वैक! क्वैक! क्वैकटी! क्वैक!

पर कभी वह ऐसी भी
सुनाई देती थीः

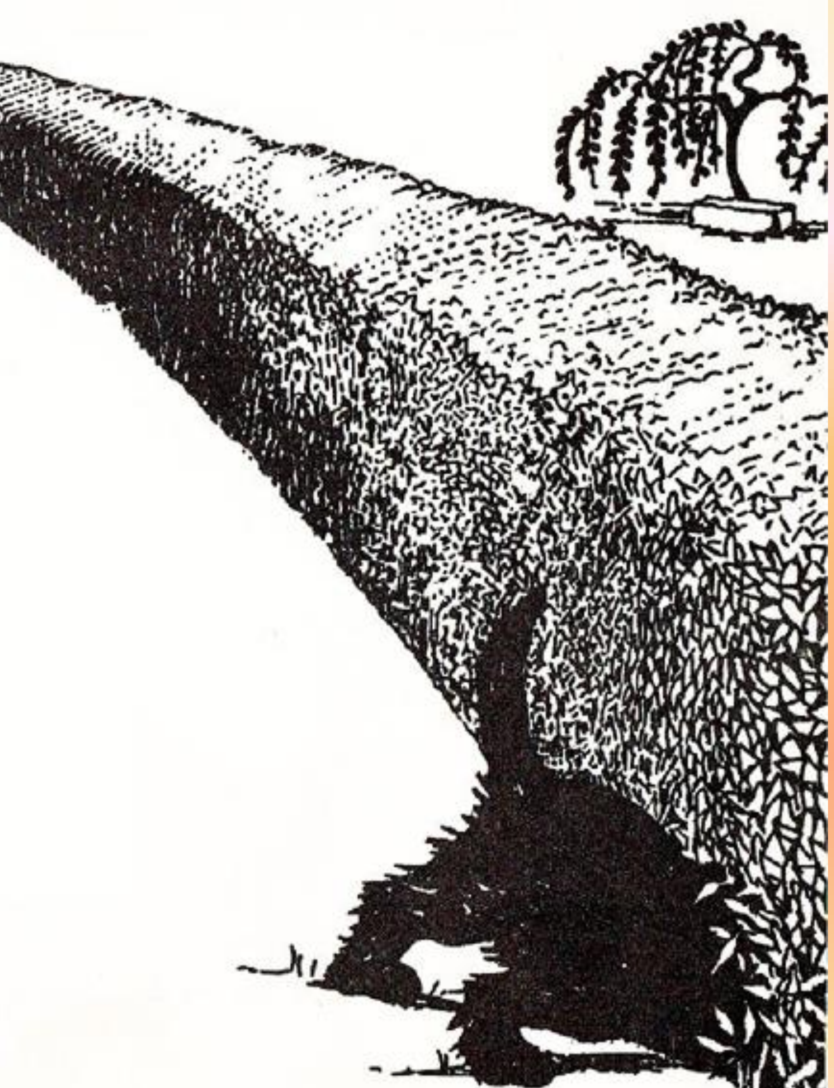
क्वैकटी! क्वैकटी!
क्वैकटी! क्वैक!

एक दिन बाहर और अन्दर के बीच का दरवाज़ा ग़लती से खुला रह गया; और एंगस पट्टे या किसी और के बिना फट से बाहर सटक लिया।



वह संकरे पथ पर तब तक दौड़ता गया जब तक वह बगीचे के आख़िर वाली हरी बाड़ तक न पहुँच गया।

उसने बाड़ के छोर तक जा कर उसे पार करना चाहा, पर बाड़ बहुत ही लम्बी थी। उसने बाड़ को लांघना चाहा, पर वह बहुत ऊँची थी। सो एंगस उसके नीचे घुसा और ..



.. बाड़ की दूसरी ओर निकल गया।



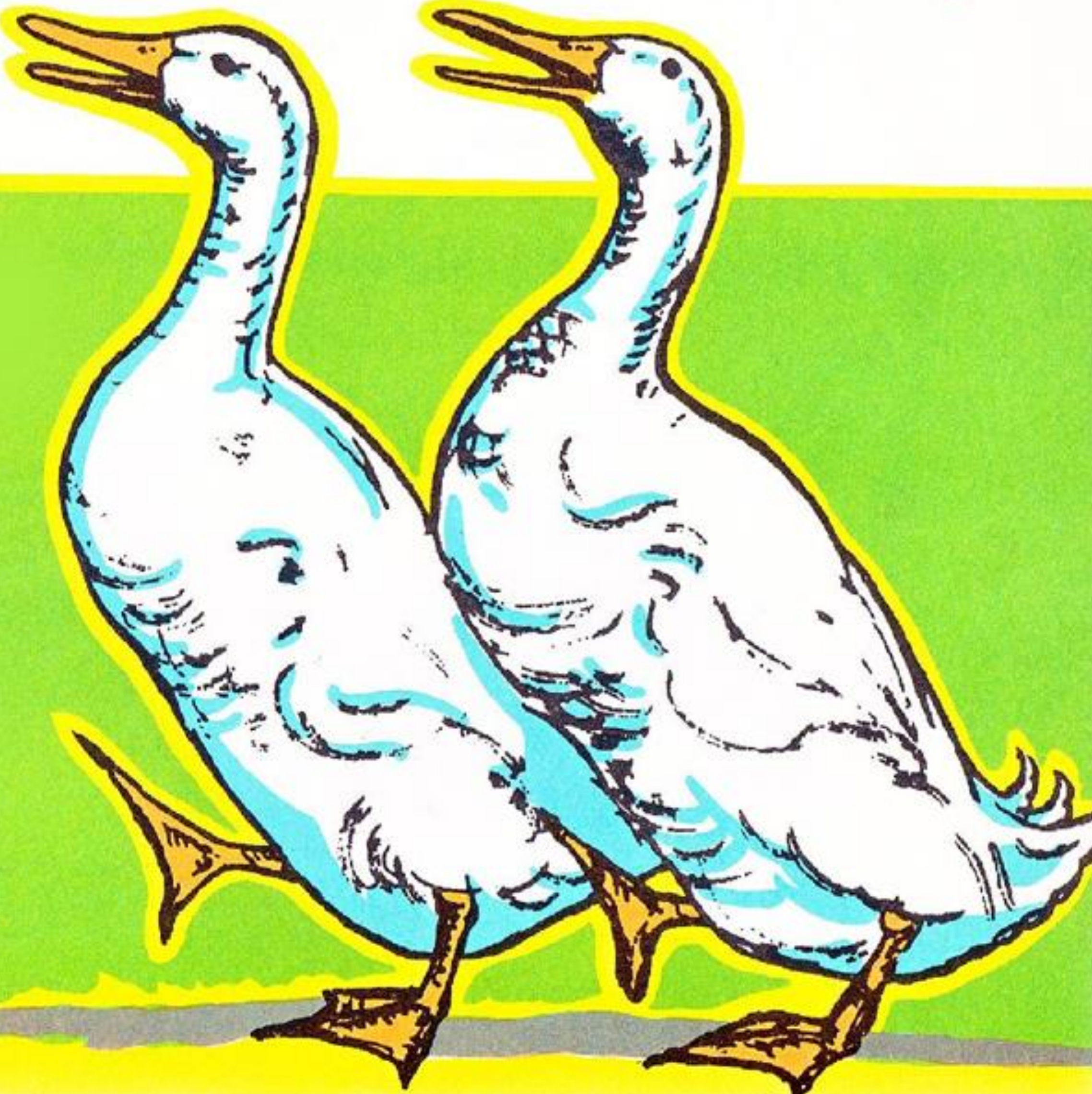
वहाँ ठीक उसके सामने

दो सफ़ेद बत्तखें थीं।

वे आगे की ओर कूच करती बढ़ रही थीं, एक पैर ऊपर और एक पैर नीचे।

क्वैक! क्वैक!

क्वैकटी! क्वैक!



एंगस ने कहाः

भौंSSSSSSSSSSSS!!!

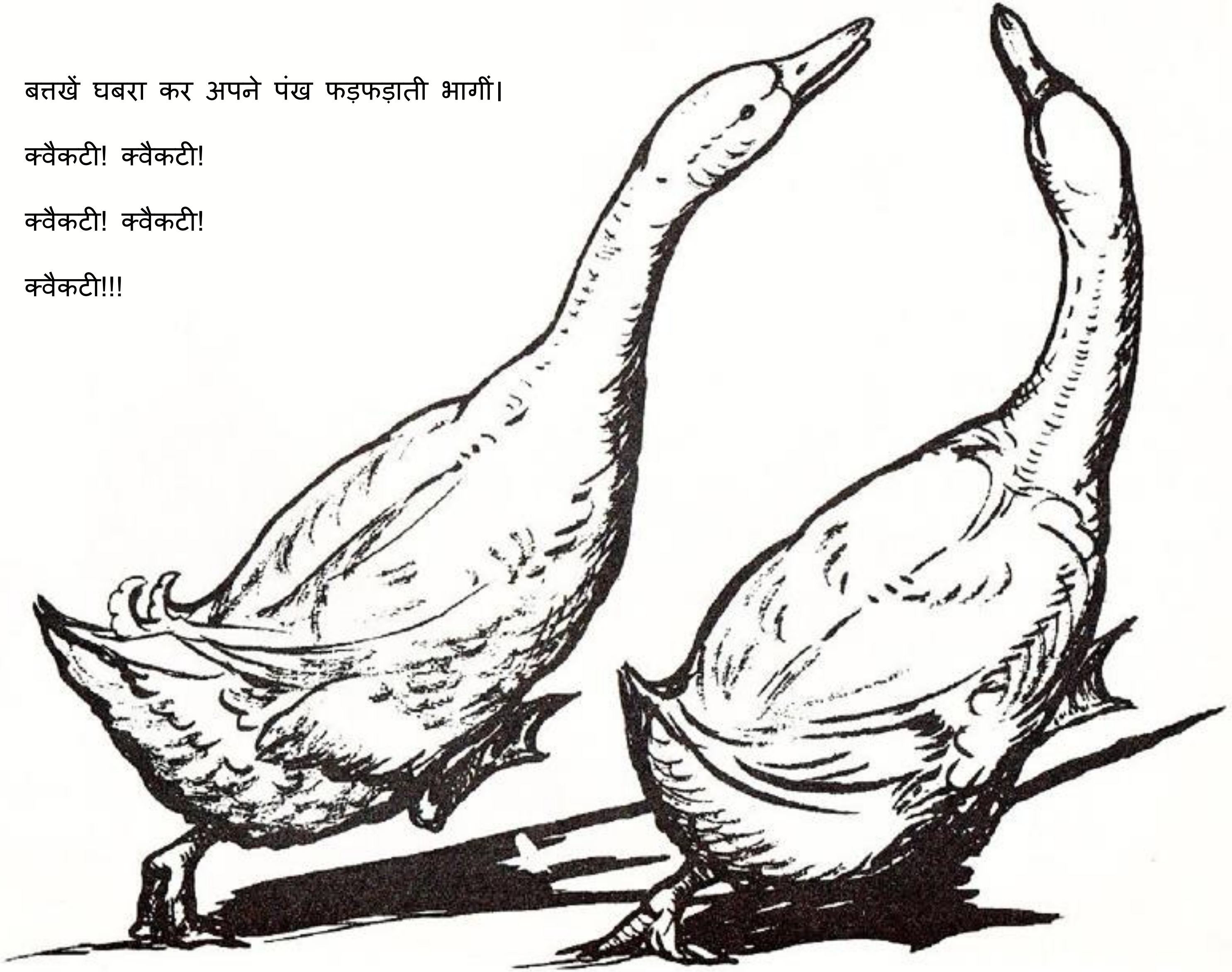


बत्तखें घबरा कर अपने पंख फड़फड़ाती भागीं।

क्वैकटी! क्वैकटी!

क्वैकटी! क्वैकटी!

क्वैकटी!!!



एंगस उनके पीछे चल पड़ा।

जल्द ही बत्तखें शहतूत के पेड़ के नीचे बनी पत्थर की नाद के पास रुकीं।

एंगस भी रुक गया। दोनों बत्तखों ने अपनी पीली चोंच साफ़ ठंडे पानी में डुबाई। एंगस देखता रहा। दोनों ने देर तक ठंडा साफ़ पानी पिया। एंगस अब भी देख रहा था। तब दोनों ने फिर से ठंडा साफ़ पानी पिया।

तब एंगस ने कहाः

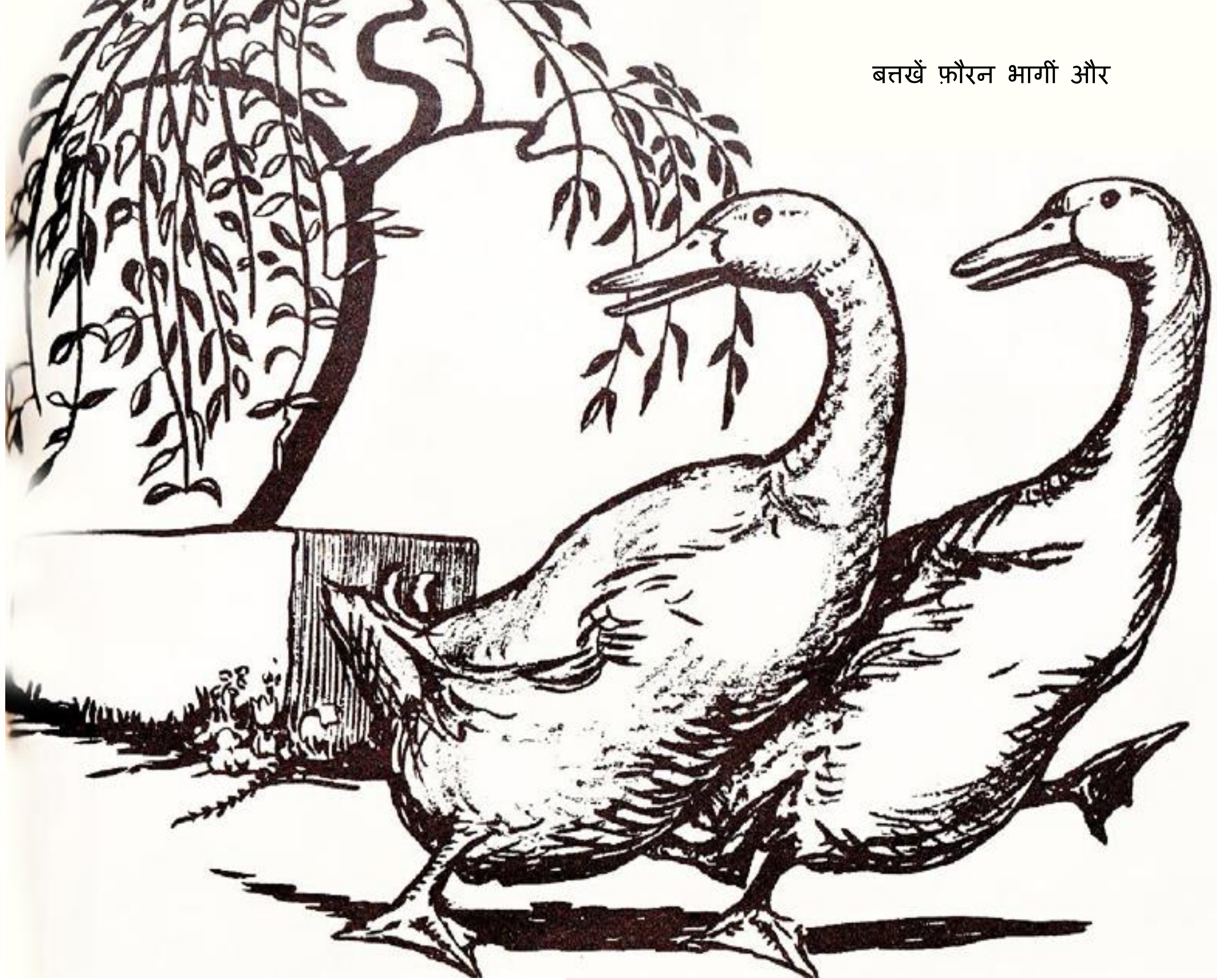




भौंssssssssssss!!!



बत्तखें फ़ौरन भागीं और

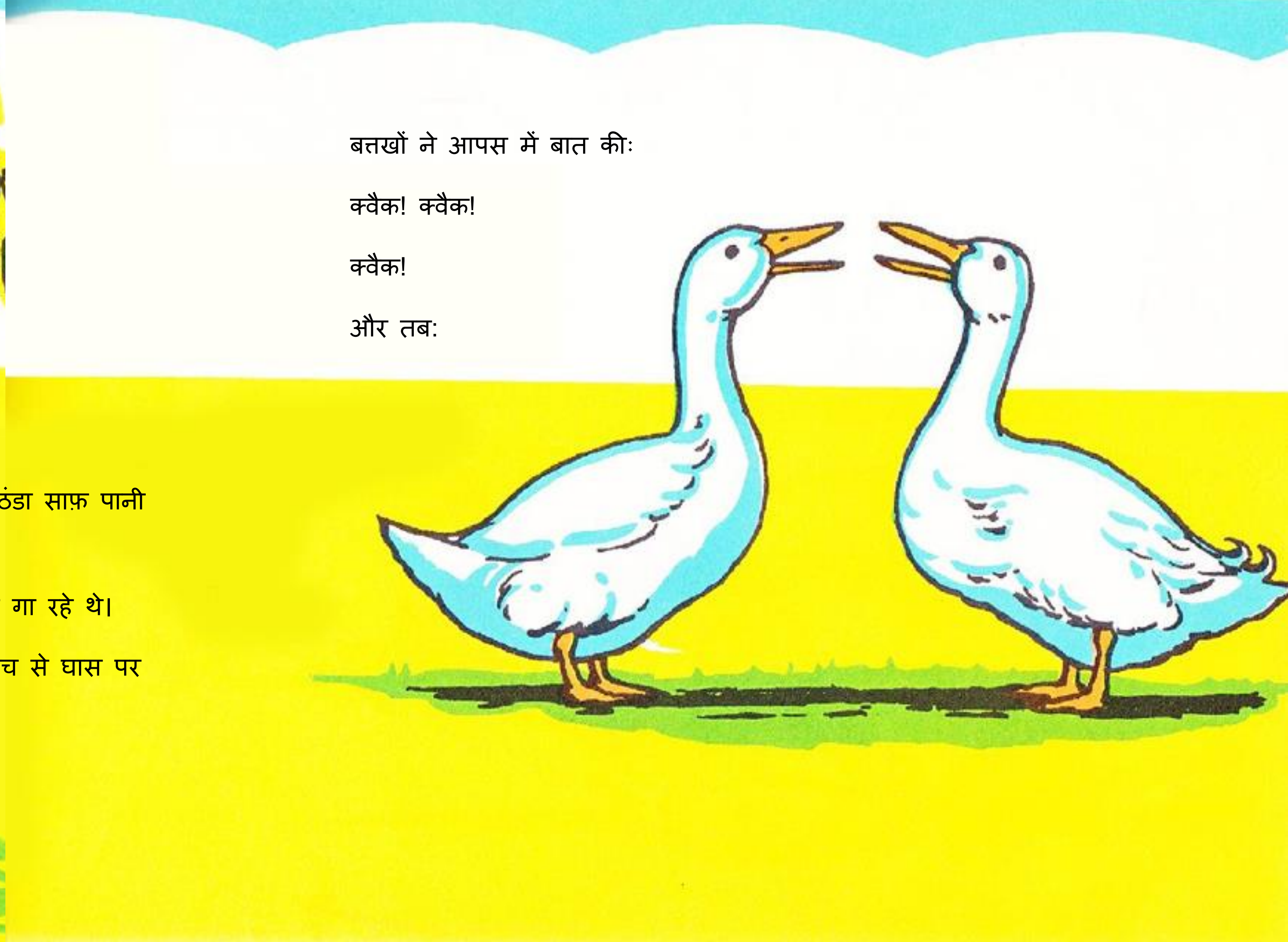




एंगस ने लपलपाते हुए ठंडा साफ़ पानी पिया।

शहतूत के पेड़ पर पाखी गा रहे थे।

और सूरज पत्तियों के बीच से घास पर नमूने बना रहा था।



बत्तखों ने आपस में बात कीः

क्वैक! क्वैक!

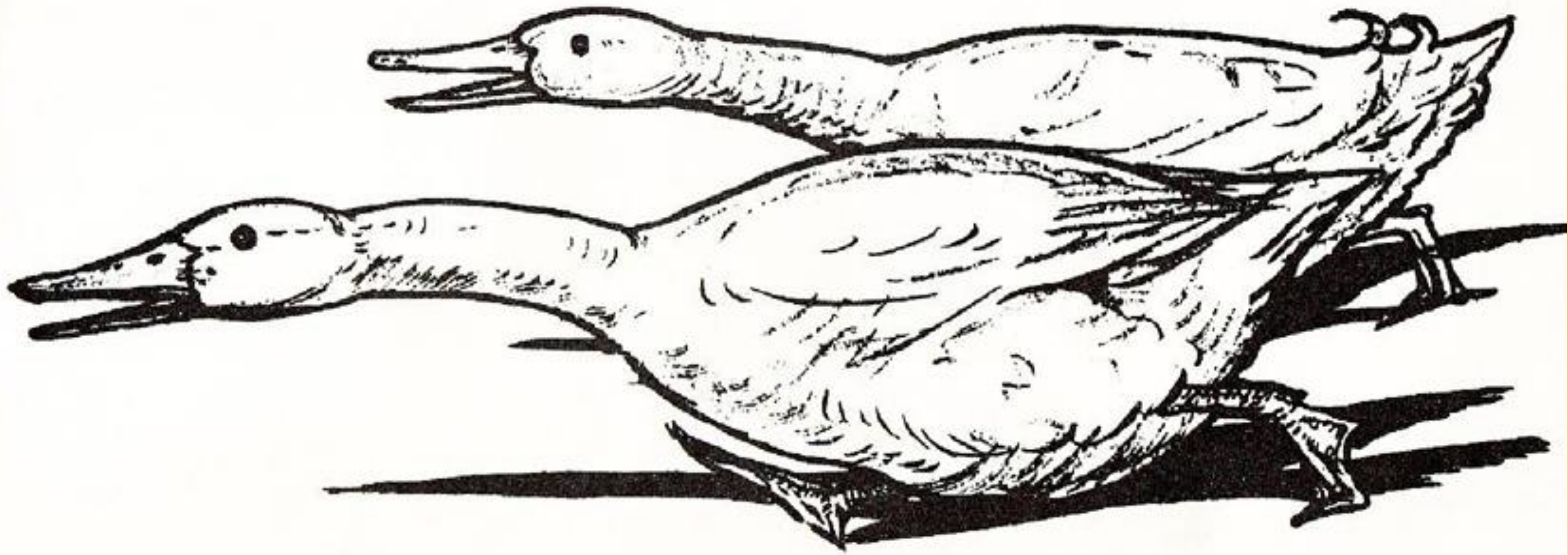
क्वैक!

और तबः

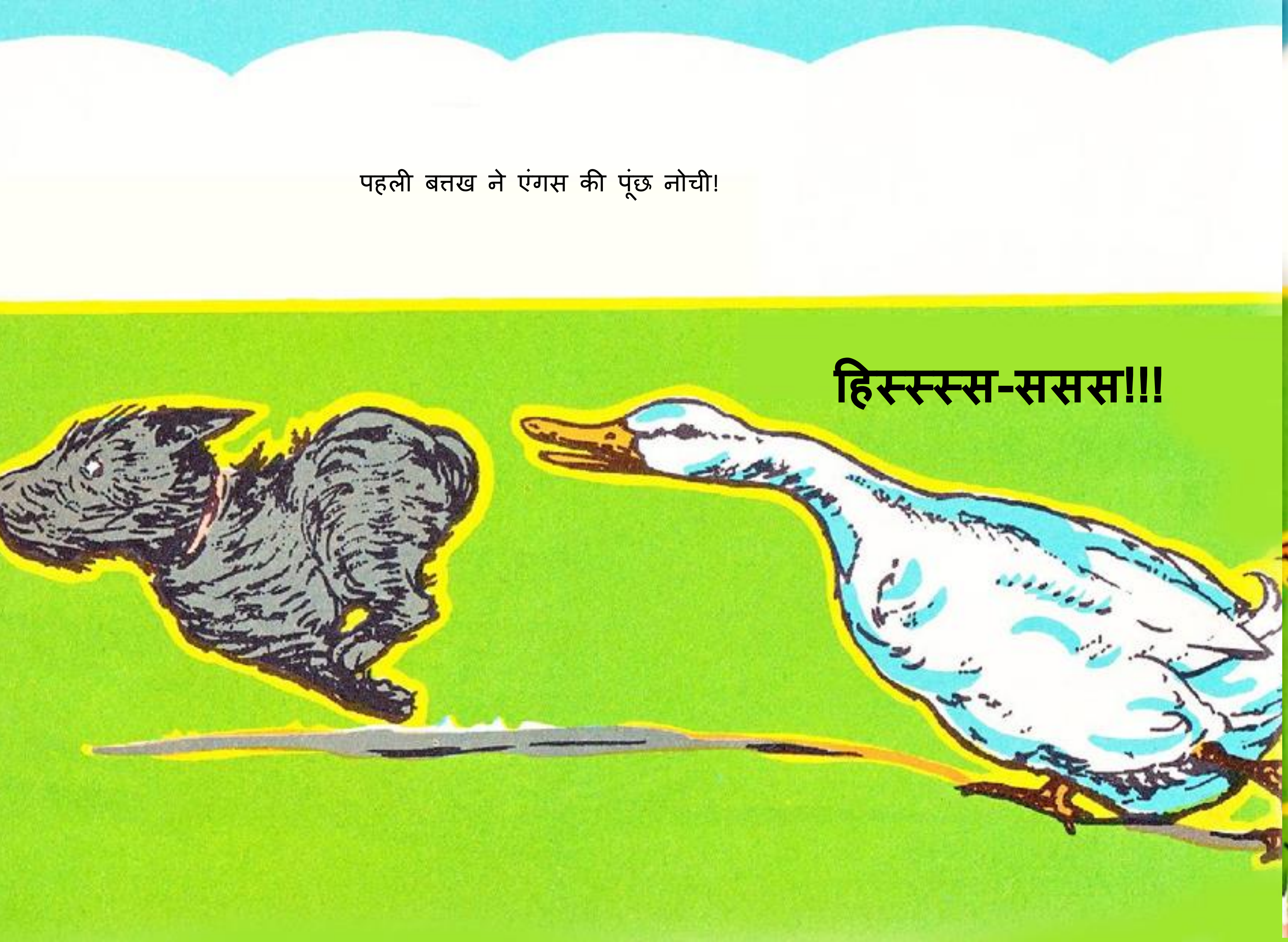
हिस्स्स्स-ससस!!!

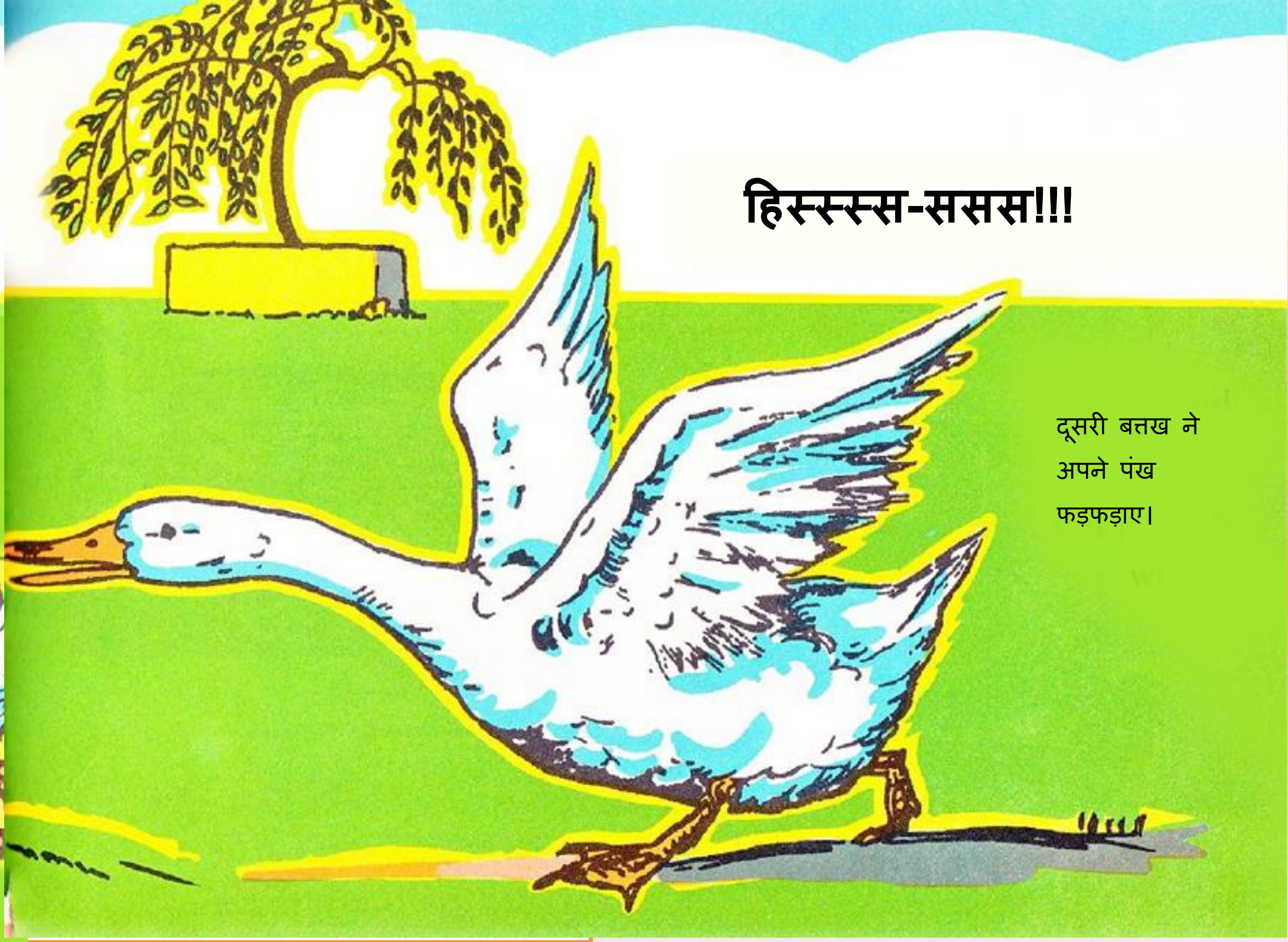


हिस्स्स्स-ससस!!!



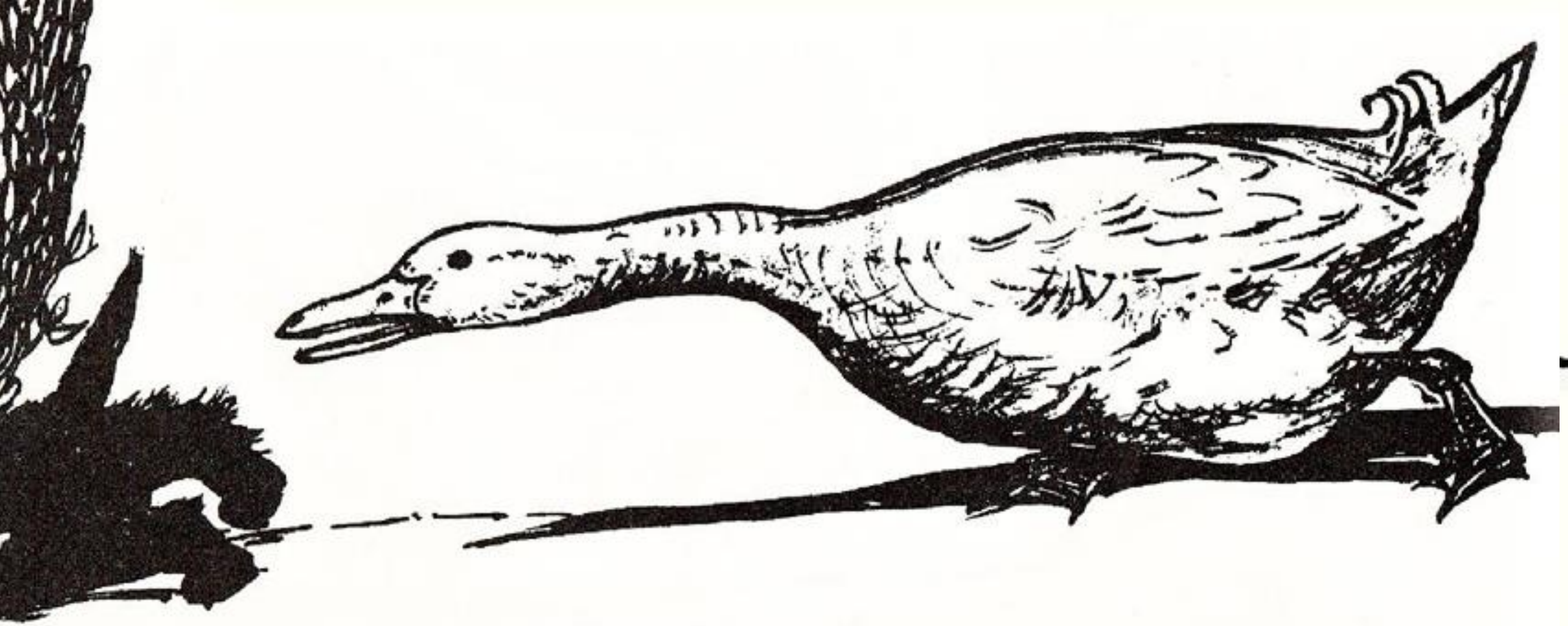
पहली बतख ने एंगस की पूंछ नोची!





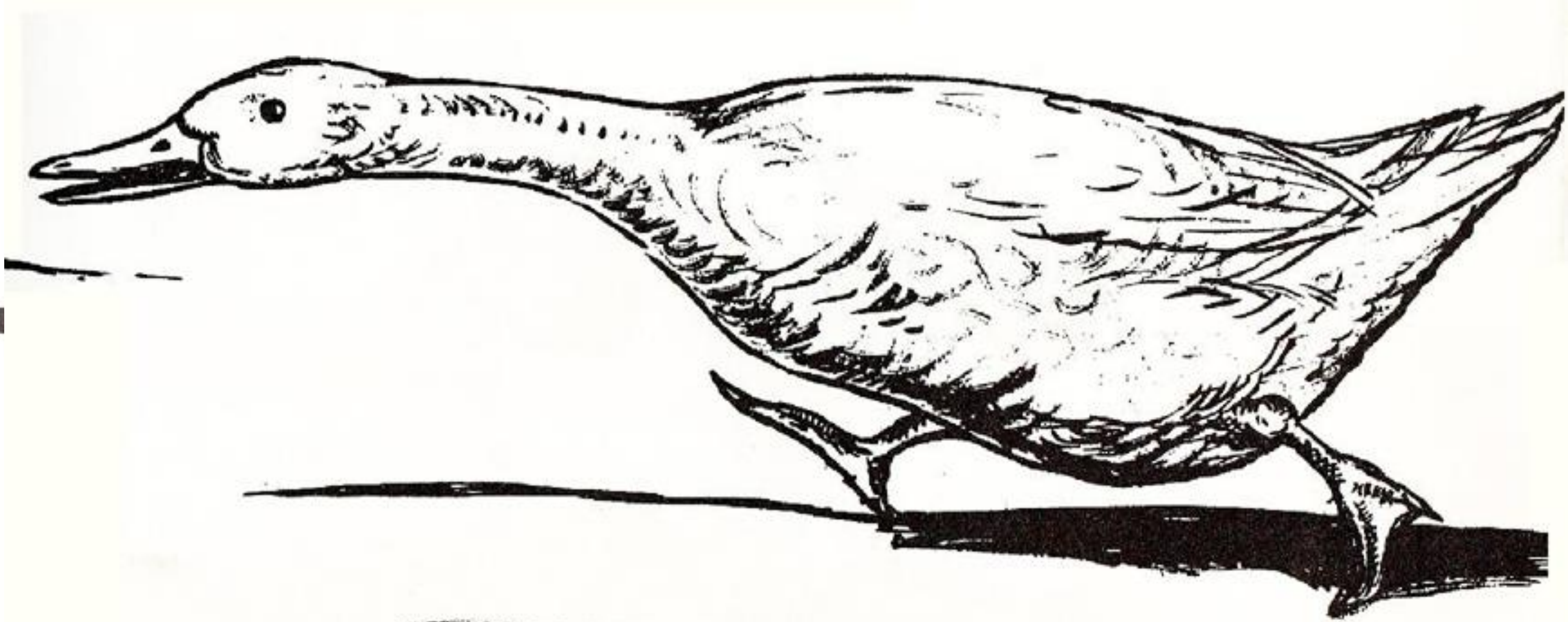
दूसरी बतख ने
अपने पंख
फड़फड़ाए।

एंगस तेज़ी से हरी बाड़ के नीचे से सरका,



और संकरे पथ पर दौड़ा,





फुर्ती से घर के अन्दर घुसा,

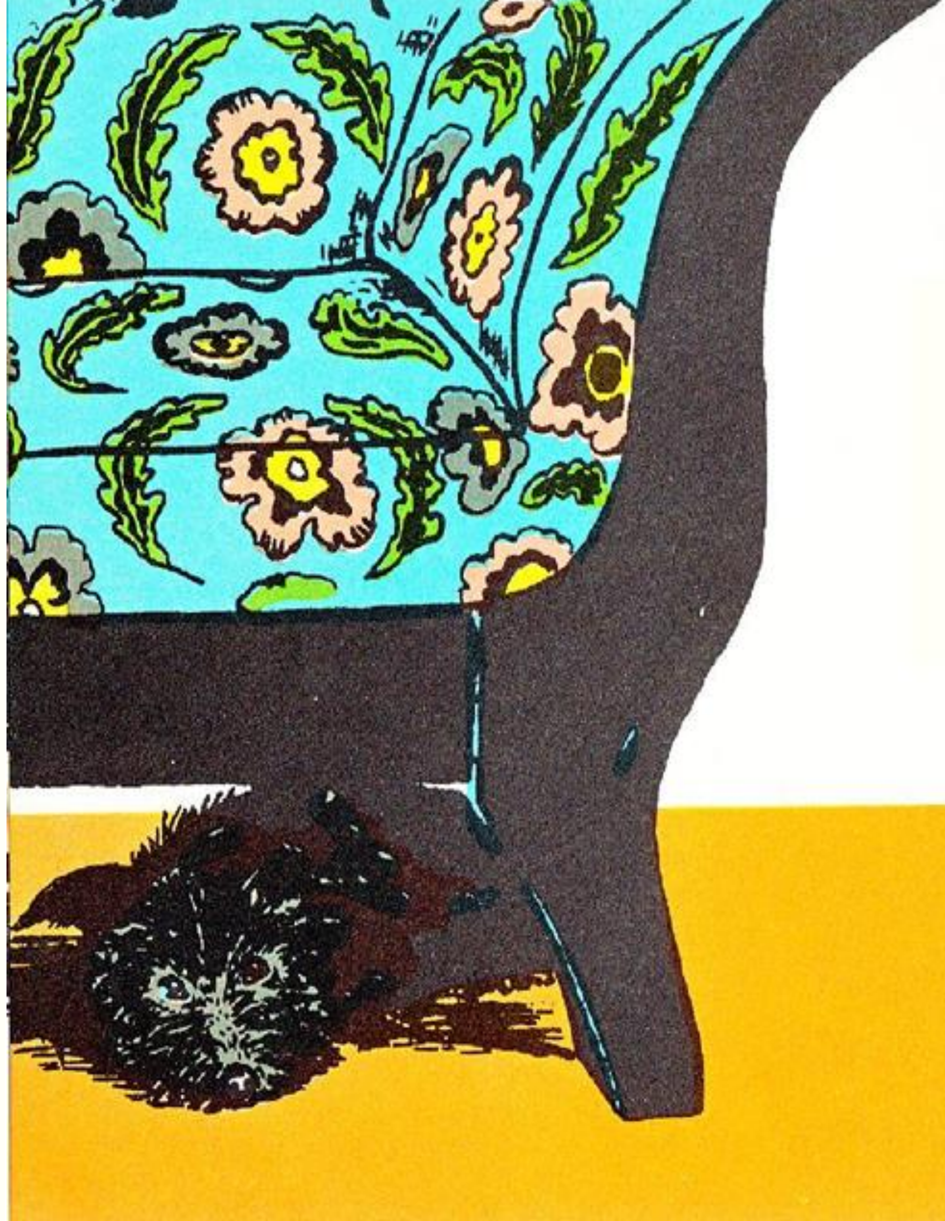


और रेंग कर सोफे की नीचे छिप गया।





अगले पूरे तीन मिनट के लिए,
घड़ी के हिसाब से ....



एंगस किसी भी चीज़ के बारे
में जानना नहीं चाहता था।

